CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

एंटोनियो फ्रांसिस्को ग्राम्सी का नव वामपंथ

डॉ नरेंद्र कुमार
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र
राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राज)
Email:narendrakrchahar@gmail.com, Mobile:9414665727

First draft received: 22.07.2023, Reviewed: 28.07.2023, Accepted: 09.08.2023, Final proof received: 15.08.2023

Abstract

ग्राम्सी कम उम्र से ही रीढ़ की हड्डी की समस्या से जूझते रहे। जिसके कारण उनका शारीरिक विकास भी प्रभावित हुआ। युवावस्था में उनकी लंबाई पांच फीट से भी कम थी तथा पीठ में कुबड़ निकल आई थी। 1911 में ग्राम्सी को टयूरीन विश्वविद्यालय द्वारा आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की गई। उन्होंने वहां आगे की पढ़ाई प्रारम्भ की। पढ़ाई पूर्ण होने से पूर्व ही वे व्यावहारिक राजनीति में आ गए। 1913 में उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी जॉइन की। 1915 मे अपने आप को व्यावहारिक राजनीति में पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। ग्राम्सी एक दार्शनिक व विचारक ही नहीं थे वरन अपने विचारों के अनुरूप सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाने के लिए उन्होंने निरन्तर प्रयास भी किया। 1926 में इटली में मुसोलिनी ने नवीन इमरजेंसी नियम लागू किए। उक्त आपातकालीन सख्ती मुसोलिनी पर हुए एक तथाकथित हमले के बाद लागू किए गए। फासीवादी सरकार ने ग्राम्सी को मुसोलिनी के लिए खतरा मानते हुए आपातकालीन कानूनों के तहत जेल में डाल दिया। ग्राम्सी फासीवादी के खिलाफ थे। उन्होंने एक फासीवाद विरोधी संगठन को समर्थन दिया। अदालत में विरोधी वकील ने दलील दी कि इस (ग्राम्सी के) दिमाग को 20 वर्ष तक काम करने से रोका जाना जरूरी है। ग्राम्सी ने जेल में 300 नोटबुक व 3000 पेज लिखे। 1937 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उक्त लेख संकलित किए जाकर प्रिजन नोटबुक्स (Prison notebooks) के रूप में अस्तित्व में आए।

Keywords: नव मार्क्सवाद, फासीवाद, समाजवाद, नागरिक समाज, आधिपत्य, प्रैक्सीस, बर्जुआ वर्ग।संस्कृति आदि.

एंटोनियो फ्रांसिस्को ग्राम्सी की गणना फ्रैंकफर्ट स्कूल के प्रमुख वामपंथियों में की जाती है। ग्राम्सी मार्क्सवादी विचारक, दार्शनिक होने के साथ-साथ पत्रिकाओं के लेखक व प्रकाशक के रूप में भी जाने जाते हैं।

एंटोनियो ग्राम्सी का जन्म इटली के सार्डिनिया द्वीप के ओरिस्टानो प्रांत के एलेस में 22 जनवरी 1891 को हुआ था। अभी अपने माता-पिता की सात संतानों में से चौथी संतान थे। उनके पिता एक छोटे स्तर के कार्मिक थे, जिन्हें 1898 में एक जालसाजी के आरोप में जेल भेज दिया गया था। इन परिस्थितियों के कारण ग्राम्सी की शिक्षा दीक्षा बुरी तरह से प्रभावित हुई। अपने परिवार के पालन पोषण के लिए स्कूल छोड़कर काम करना शुरू किया। ग्राम्सी कम उम्र से ही रीढ़ की हड्डी की समस्या से जूझते रहे। जिसके कारण उनका शारीरिक विकास भी प्रभावित हुआ। युवावस्था में उनकी लंबाई पांच फीट से भी कम थी तथा पीठ में कुबड़ निकल आई थी। 1911 में ग्राम्सी को टयूरीन विश्वविद्यालय द्वारा आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की गई। उन्होंने वहां आगे की पढ़ाई प्रारम्भ की। पढ़ाई पूर्ण होने से पूर्व ही वे व्यावहारिक राजनीति में आ गए। 1913 में उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी जॉइन की। 1915 मे अपने आप को व्यावहारिक राजनीति में पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। ग्राम्सी एक दार्शनिक व विचारक ही नहीं थे वरन अपने विचारों के अनुरूप सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाने के लिए उन्होंने निरन्तर प्रयास भी किया। 1926 में इटली में मुसोलिनी ने नवीन इमरजेंसी नियम लागू किए। उक्त आपातकालीन सख्ती मुसोलिनी पर हुए एक तथाकथित हमले के बाद लागू किए गए। फासीवादी सरकार ने ग्राम्सी को मुसोलिनी के लिए खतरा मानते हुए आपातकालीन कानूनों के तहत जेल में डाल दिया। ग्राम्सी फासीवादी के खिलाफ थे। उन्होंने एक फासीवाद विरोधी संगठन को समर्थन दिया। अदालत में विरोधी वकील ने दलील दी कि इस (ग्राम्सी के) दिमाग को 20 वर्ष तक काम करने से रोका जाना जरूरी है। ग्राम्सी ने जेल में 300 नोटबुक व 3000 पेज लिखे। 1937 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उक्त लेख संकलित किए जाकर प्रिजन नोटबुक्स (Prison notebooks) के रूप में अस्तित्व में आए। ग्राम्सी के विचारों पर मार्क्स के अलावा लेनिन, मैकियावली, जॉर्ज सोरेल, बेनेडेटो क्रॉस, पैरेटो, लेब्रियोला इत्यादि का प्रभाव था। इटली के इतिहास, फासीवाद, फॉर्डिज्म, टायलरिज्म, फ्रांस की क्रान्ति, लोकप्रिय संस्कृति जैसे विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए।

ग्राम्सी के समय की परिस्थितियां

ग्राम्सी के समय यूरोप में औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी तथा विश्व की शक्तियां उपनिवेशों के लिए आपस में लड़ रही थी। प्रथम विश्व युद्ध भी इसी दौरान हुआ था। इटली में मुसोलिनी के नेतृत्व में 1922 में फासीवाद की स्थापना हो चुकी थी। इस फासीवाद की एक खास बात यह थी कि इसे जनसमर्थन प्राप्त था। 1917 में रूस में बॉल्वेसिक पार्टी के द्वारा रूसी क्रांति की घटना भी हुई थी। उक्त क्रांति से समाजवादी सरकार की स्थापना हुई। इन समस्त स्थितियों का ग्राम्सी के विचारों पर व्यापक प्रभाव था।

ग्राम्सी मार्क्सवादी विचारक होने के कारण कामगारों की क्रांति में विश्वास रखते थे। मार्क्स के वैज्ञानिकों समाजवाद के अनुसर इंग्लैंड, अमेरिका, इटली इत्यादि देशों में पूंजीवाद पर्याप्त विकसित हो गया था। अतः यहां मजदूर वर्ग के द्वारा समाजवादी क्रान्ति होनी चाहिए थी। परंतु रूस के अलावा किसी भी औद्योगिक समाज में राज्य व्यवस्था में बदलाव नहीं हुआ। इसके उलट उपरोक्त पूंजीवादी देशों में मजदूर संतुष्ट दिख रहा था। इटली की स्थिति तो और भी अलग थी। यहां जनसामान्य के समर्थन से समाजवाद की बजाय घोर दमनकारी व उत्पीड़नकारी फासीवाद अस्तित्व में आया। इस प्रकार मार्क्स के विचार अप्रासंगिक प्रतीत होने लगे। यह भी कहा जा सकता है कि मार्क्स के सिद्धान्त 20 वीं सदी की सामाजिक व्यवस्था की व्याख्या करने में सफल नहीं दिख रहे थे। ऐसी स्थिति में मार्क्स को नवीन स्थितियों के साथ सुसंगत बनाना आवश्यक हो गया था।

मार्क्स के अनुसार वर्ग चेतना के विस्तार के साथ मजदूर 'अपने आप में वर्ग' तथा 'अपने आप के लिए वर्ग' में रूपांतरित होते हुए अंत में वर्ग संघर्ष के लिए तैयार होंगे। परंतु विकसित पूंजीवादी राष्ट्रों में ऐसा नहीं हुआ। ग्राम्सी यह जानना चाहता था कि विकसित पूंजीवादी राष्ट्रों में ऐसी क्या वजह रही जिसके कारण वहां के मजदूर वर्ग क्रांति के लिए सक्रिय नहीं हुआ। ग्राम्सी यह भी जानना चाहता था कि सत्ता किस आधार पर संचलित होती है। ग्राम्सी ने इसकी व्याख्या करते हुए मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद को अस्वीकार कर आधिपत्य (Hegemony) की अवधारणा विकसित की।

आधिपत्य (Hegemony)

ग्राम्सी की आधिपत्य की अवधारणा राजनीतिक दर्शन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। ग्राम्सी ने निष्कर्ष निकाला कि सत्ता की प्राप्ति व संचालन आधिपत्य के कारण होता है। ग्राम्सी के अनुसार समाज में आधिपत्य शक्ति व सहमति दोनों से स्थापित किया जा सकता है। बर्जुआ वर्ग सहमति का रास्ता अपनाता है क्योंकि शक्ति के मामले में वह मजदूर वर्ग से कमतर ही रहता है। यही नहीं सहमति पर निर्मित प्रभुत्व दीर्घकालिक होता है व युक्तिसंगत प्रतीत होता है। ग्राम्सी का विचार है कि पूंजीपति वर्ग अपने बुद्धिजनों (Intellectuals) के माध्यम से ऐसे विचारों को निर्मित व समाज में प्रचारित–प्रसारित करता है जिससे मजदूर वर्ग के मन में क्रान्ति का भाव ही उत्पन नहीं हो पाता है। मजदूर वर्ग को यह लगता है कि पूंजीपति उनके हित में काम कर रहा है। यही नहीं समाज में अहिंसा के विचार को जनमानस में बैठाया जाता है ताकि जनसामान्य कभी हिंसात्मक क्रान्ति का विचार न करें। इस प्रकार सत्तासीन लोग जनसामान्य के दिमाग में अपनी न्यायोचितता व उपयुक्तता का विचार भर देते हैं जिससे जनसामान्य लोग उन्हें अपने हितैषी मानकर उनकी सत्ता व आधिपत्य को युक्तिसंगत मानकर स्वीकार कर लेते हैं।

ग्राम्सी के अनुसार पूंजीपति वर्ग बल व ताकत की बजाय जनसमान्य के विचारों को प्रभावित कर अपनी स्थिति को बनाए रखते हैं। ग्राम्सी ने इसे वैचारिक या सांस्कृतिक आधिपत्य कहा है। ग्राम्सी ने बताया कि सांस्कृतिक आधिपत्य के लिए नागरिक समाज का उपयोग किया जाता है।

नागरिक समाज (Civil Society)

ग्राम्सी ने परिवार, स्कूल, चर्च, शिक्षा जैसी संस्थाओं को नागरिक समाज में शामिल किया है। ये संस्थाएं व्यक्तित्व निर्माण करती है। ग्राम्सी के अनुसार नागरिक समाज की संस्कृति को प्रभावित कर जनसामान्य के विचारों को नियंत्रित किया जाता है। ग्राम्सी ने इसे सांस्कृतिक आधिपत्य या वैचारिक आधिपत्य कहा है। ग्राम्सी के अनुसार नागरिक समाज में संगठनकारी बुद्धिजीवी (Organic intellectuals) काम करते हैं जो विचारों को निर्मित करते हैं। ये बुद्धिजीवी शिक्षण संस्थानों व विभिन्न संगठनों में काम करते हैं। ये सामाजिक जीवन को नवीन दिशा देते हैं। ग्राम्सी का मानना है कि दार्शनिकों व बुद्धिजीवियों का कार्य केवल समाज को समझना ही नहीं है वरन उसे बदलना भी है। उन्होंने सामाजिक विचारकों व बुद्धिजीवियों से आग्रह किया है कि सामाजिक व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए दर्शन व विचार प्रतिपादन के साथ साथ उन्हें अपने विचारों को सजीव रूप में लाने के लिए समाज में काम भी करना चाहिए। अर्थात् ग्राम्सी चिंतकों से अपने चिन्तन को व्यावहारिक स्वरूप देने का आग्रह करते हैं। इसे उन्होंने प्रैक्सिस (Praxis) कहा है।

आर्थिक विवेचन (Economic analysis)

मार्क्स ने आर्थिक निर्धारणवाद को आधार बनाकर अपना सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उन्होंने लिखा कि वर्गों को निर्धारण आर्थिक आधार पर होता हैं। ग्राम्सी मार्क्स के इस विचार को अस्वीकार नहीं करते हैं। उनका मानना है कि आर्थिक कारकों के अलावा विचारधारायी व सांस्कृतिक पक्ष भी महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार ग्राम्सी ने परंपरागत मार्क्सवादियों के आर्थिक निर्धारणवाद की बजाय सांस्कृतिक आधिपत्य पर जोर दिया। इसी कारण उन्हें नव मार्क्सवादी कहा जाता है। ग्राम्सी के अनुसार पश्चिमी विकसित पूंजीवादी समाजों में पूंजीपति वर्ग ने बुद्धिजनों (Intellectuals) के माध्यम से अपने हितों के अनुरूप विचारधारा व संस्कृति का निर्माण कर मजदूर वर्ग की वैचारिकी में विद्यमान विरोध का शमन कर दिया है। मजदूर वर्ग पूंजीपति वर्ग को विरोधी न मानकर अपने लिए उपयोगी मानता है।

ग्राम्सी का मत है कि औद्योगीकरण के वस्तुओं के वृहद उत्पादन (Mass production) की घटना ने मजदूरों को भी वे वस्तुएं उपलब्ध करा दी है जो पहले पूंजीपतियों के पास ही होती थी। परिणामस्वरूप इस आधार पर पूंजीपति व मजदूर वर्ग में अन्तर कम होने से दोनों वर्गों के बीच का विरोध भी कम हुआ है।

ग्राम्सी मार्क्स के अर्थवाद में विश्वास रखते हैं परंतु इसके साथ साथ वे वैचारिकी व सांस्कृतिक पक्ष को महत्त्व देते हैं। उनके मुताबिक आर्थिक विभेद चाहे कितने ही हो, जब तक मजदूर वर्ग अपनी संस्कृति व विचारधारा का निमार्ण तथा प्रसार नहीं करेंगे तब तक क्रान्ति सम्भव नहीं है। ग्राम्सी ने लेनिन के समय रूस की यात्रा की। उन्होंने वहां की क्रान्ति का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि क्रान्ति के पश्चात् रूस में वैसा बदलाव नहीं आया जैसी मार्क्स ने घोषणा की थी। क्रान्ति के पश्चात् रूस में राजनीतिक हत्याएं होने लगी। ग्राम्सी ने लिखा है कि रूस की क्रान्ति मजदूर वर्ग की क्रान्ति नहीं थी वरन कमज़ोर राजा के खिलाफ सत्ता प्राप्ति के लिए लालायित एक गुट ने राजा को हटा कर सत्ता पर कब्जा कर लिया था। इसी कारण रूस में समाजवाद की स्थापना नहीं हुई।

संदर्भ ग्रंथ

1. सिलेक्शन फ्रॉम द प्रिजन नोटबुक, इंटरनेशनल पब्लिशर्स को.,1971
2. द मॉडर्न प्रिंस, एंड अदर राइटिंग्स, इंटरनेशनल पब्लिशर्स, 1957
3. मॉडर्निटी, पोस्ट मॉडर्निटी एंड नियो सोशियोलॉजिकल थियरीज, रावत पब्लिकेशंस,2002